भारत-यूरोपीय संघ व्यापार शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री का **भाषण**

हेलसिंकी, फिनलैंड
12 अक्तूबर 2006

फिनलैंड के प्रधानमंत्री श्री मात्ति वाहनेन, हमारे वाणिज्य उद्योग मंत्री श्री कमलनाथ, यूरोपीय संघ के व्यापार कमिश्नर श्री पीटर मंडेल्सन, यूरोपीय संघ अध्यक्ष श्री क्रिस्टोफर टेक्सेल, फिक्की के अध्यक्ष श्री सरोज पोद्दार, भारतीय उद्योग परिसंघ के अध्यक्ष श्री आर शेषाशायी ,यूएनआईसीई के उपाध्यक्ष श्री लुका कॉरडेरो डी मोन्टेज़मोलो और इस सातवें यूरोपीय संघ-भारत व्यापार सम्मेलन में भाग लेने आए हुए अन्य महानुभावगण,

भारत और यूरोपीय संघ के व्यापार जगत की प्रमुख हस्तियों से विचारों का आदान-प्रदान करने का यह महत्वपूर्ण अवसर पाकर मैं स्वयं को बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के साथ-साथ व्यापार शिखर सम्मेलन भी आयोजित करने की परंपरा दर्शाती है कि दोनों पक्षों के बीच बढते़ सहयोग में व्यापार और व्यवसाय कितना महत्वपूर्ण है।

वास्तव में यह व्यापार का बदलता माहौल ही है, जिसके कारण हमारी दो महान सभ्यताएं आधुनिक विश्व में एक दूसरे के नजदीक आई हैं। लेकिन यह बहुत समय पहले की बात है और उस समय दुनिया की स्थिति अलग थी। आज हमारे दोनों के व्यापार एकीकृत वैश्विक वातावरण में बराबरी के स्तर पर मिल रहे हैं। इसके अलावा भारत और यूरोपीय संघ दोनों ही कुछ मूल्यों को महत्व देते हैं, जैसे लोकतंत्र के प्रति निष्ठा, कानून का शासन, मौलिक मानव अधिकारों का सम्मान आदि। कुछ वर्ष पहले ऐसा समय था जब हमारे अखबारों में ज्यादातर भारत में निवेश करनेवाली यूरोपीय कंपनियों की खबरें छपती थीं। आज हम यूरोप में भारतीय कंपनियों और व्यवसायियों द्वारा निवेश करने की खबरें पढते़ हैं। मैं हमारे व्यापार संबंधों के इस नये चरण का स्वागत करता हूं।

मैं समझता हूं कि आप में सेकई मेरे मंत्रिमंडल के सहयोगी वाणिज्य उद्योग मंत्री श्री कमलनाथ और भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों से मिल चुके हैं। मुझे विश्वास है कि उन्होंने आपको भारत में हो रही आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों के बारे में ताजा जानकारी दी है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि मानव इतिहास में ऐसा उदाहरण कहीं नही मिलता है कि एक अरब से अधिक लोग एक खुले समाज,खुली अर्थव्यवस्था और खुले राजनीतिक तंत्र में अपनी सामाजिक और आर्थिक उन्नति और उत्थान का रास्ते ढूंढते रहे। इस दृष्टि से मैं समझता हूं कि विकास के इस माडल के बारेमें भारत के प्रयोग की सफलता मानव समाजों को आगे ले जाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे पूरी उम्मीद है कि नये साहसिक प्रयोगों और उद्यमों के इन प्रयासों में भारत और यूरोप सक्रिय भागीदार होंगे।

जैसा कि आप जानते हैं कि यह लगातार चौथा वर्ष है कि भारत की राष्ट्रीय आय में 8 प्रतिशत वार्षिक दरवार्षिक की विकासदर दर्ज हुई है यह अप्रत्याशित है। चालू वर्ष की पहली तिमाही में विकास की दर 8.9 प्रतिशत की नई उंचाई तक पहुंच गई। हमारे औद्योगिक क्षेत्र में विकास की दर 8.5 से 9 प्रतिशत चल रही है। हमारी बचतों और निवेश की दरें सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30 प्रतिशत हैं। और सबसे ज्यादा

उत्साहजनक बात तो यह है कि अगर हम अपनी जनसंख्या के आयुवर्ग की स्थिति को देखें , तो आने वाले वर्षों में बचतों और निवेश में बहुत तेजी से बढ़ोतरी होगी। और अगर हम अपने युवा कामगारों के लिए उपयोगी रोजगार ढूंढ सकें, तो इससे इस कठोर और स्पर्धापूर्ण विश्व में अपना स्थान बनाने के भारत के दुष्तर प्रयासों के इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होगा।

भारत के विनिर्माण क्षेत्र में आटोमोबाइल उद्योग का इस वर्ष विकास मेंउल्लेखनीय योगदान रहा है। इस वर्ष की पहली तिमाही में व्यावसायिक वाहनों के उत्पादन में 36.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। विमान सेवाओं में 32.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मोबाइल फोन सहित टेलीफोन कनेक्शनों की संख्या में, जिसमें फिनलैंड की विशेष दिलचस्पी है, 48.9 प्रतिशत की शानदार वृद्धि हुई है।

पिछले वर्षों में हमारा सेवा क्षेत्र का इस सराहनीय विकास में ठोस योगदान रहा है, जो अभी भी है। भारत निश्चित रूप से उभरते ज्ञान उद्योग में अग्रणी स्थान प्राप्त करेगा। व्यापक तौर पर यदि आर्थिक स्थिति सही चलती रही, तो चालू वर्ष के दौरान हमारे सकल घरेलू उत्पाद में 8.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज होनी चाहिए, जिसमें औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि लगभग 10 प्रतिशत होगी। मुझे यह देखकर प्रसन्नता है कि जुलाई 2006 में औद्योगिक उत्पादन की विकास दर 12.4 प्रतिशत दर्ज हुई, जो पिछले 10 वर्षों में सबसे ज्यादा है।

मैं, ये आंकडे आपके सामने इसलिए रख रहा हूं जिससे आप भारत में हो रहे परिवर्तनों के बारे में जान सकें। भारत में इस समय जो विकास की प्रक्रिया चल रही है, वह पहले के मुकाबले कहीं अधिक स्थाई है। इसके साथ-साथ उत्पादनों और सेवाओं के विपणन के लिए इसका विस्तार भी हो रहा है और इस प्रक्रिया में व्यापार, पूंजी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति के नये अवसर पैदा हो रहे हैं।

लेकिन हम जानते हैं कि विकास की गति को बनाए रखने के लिए हमें बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में बहुत कुछ करना होगा, और इसकी गुणवत्ता को सुधारना होगा। निजी क्षेत्र के निर्माताओं और निवेशकों के साथ राजमार्गों के निर्माण तथा बंदरगाहों, दूरसंचार व्यवस्था और ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों के विकास में सहयोग बढ़ाने के कई नये तरीके अपनाए गए हैं। कई बड़ी भारतीय विदेशी कंपनियों को ये क्षेत्र काफी फायदेमंद लगते हैं। मैं यूरोपीय फर्मों को भारत में बुनियादी ढांचे के विशाल क्षेत्र में हो रहे विकास में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं।

मुझे बताया गया है कि वर्ष 2003 में यूरोस्टेट द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में काम करने वाली यूरोपीय कंपनियों को अपनी पूंजी पर 13 प्रतिशत की आमदनी हो रही है, जबकि विश्व औसत 6 प्रतिशत की है। आज सुबह फिनलैंड के प्रधानमंत्री मुझे भारत में फिनलैंड के व्यवसायियों के अनुभव के बारे में बता रहे थे। उन्होंने कहा कि शुरू के वर्ष मुश्किल के थे। लेकिन अब वह वक्त गुजर चुका है। जब से सुधार प्रक्रिया शुरू हुई है, तब से निवेश के महौल में बहुत ज्यादा तबदीली आई है और हमारा संकल्प है कि हम इसे साल- दर- साल बेहतर बनायेंगे।

पिछले वर्ष नई दिल्ली में भारत-यूरोपीय संघ व्यापार शिखर सम्मेलन में यूरोपीय संघ के जिन निवेशकों ने और प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और उन्होंने जो मुद्दे उठाए थे उनकी मुझे जानकारी है। इस व्यापार शिखर सम्मेलन में जो बातें सामने आई हैं, मैंने उनसेबहुत कुछ सीखा है। और जब हम वापस जाएंगे, तो हमारी सरकार इन पर पूरी गंभीरता के साथ गौर करेगी।

सरकार ने भौतिक बुनियादी ढांचे में सुधार सहित कई तरह की चिंताओं को दूर करने की कोशिश की है। एक ही ब्रैंड वाली खुदरा दुकानों के लिए हमने 51 प्रतिशत विदेशी पूंजी की अनुमति दी है। मैं जानता हूं कि यह बहुत संतोषजनक नहीं लग रहा है लेकिन यह अच्छी शुरूआत है। कई विदेशी कंपनियों ने इस मौके का फायदा उठाया है और कई अन्य कंपनियां तेजी से बढ़ते भारतीय खुदरा बाजार में पैर जमाने की गंभीरता से कोशिश कर रही हैं। जैसा कि आप जानते हैं थोक व्यापार और फ्रैंचाइजी के रास्ते विदेशी निवेशकों के लिए भारत में पहले ही खुले हुए हैं।

भारत में बौद्धिक संपदा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए हमने कई ठोस कदम उठाए हैं। मैं महसूस करता हूं कि बौद्धिक संपदा व्यवस्था के लिए एक मजबूत विश्वसनीय प्रणाली, व्यापार की सफलता का आधार है। आज के आधुनिक प्रोद्योगिकी वाले इस विश्व में हमारा दृढ स़ंकल्प है कि हम ऐसा जरूर करेंगे। पिछले वर्ष हमने औषधियों जैव तकनीकी उत्पादनों और कीटनाशकों के लिए पेटेंट्स की अनुमति देने के लिए भारतीय पेटेंट्स कानून में संशोधन किया। इस वर्ष के शुरू में इस नये कानून को लागू करने के लिए हमने कुछ नियमों को अधिसूचित किया। पेटेंट की स्वीकृति के लिए अधिकतम अवधि को हमने अपनी अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के अनुरूप तय किया है। भारतीय संपदा व्यवस्था को लागू करने के लिए हमने तंत्र को काफी आधुनिक और मजबूत बनाया है, हालांकि आप जानते हैं कि यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।

हमारे पास विशाल जनशक्ति है और अब एक पूरी तरह से अनुकूल बौद्धिक संपदा व्यवस्था भी है। इसे देखते हुए अनुसंधान और विकास सुविधाओं सहित ज्ञान-आधारित उद्योगों में पूंजी निवेश करना बहुत आकर्षक प्रस्ताव हो सकता है। वास्तव में फार्चून की 500 से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों में से 100 से ज्यादा कंपनियां भारत में अपने अनुसंधान केन्द्र पहले ही खोल चुकी हैं तथा कई और निवेश इस समय किए जा रहे हैं।

भारत में व्यापार और उद्योग शुरू करने से संबंधित प्रक्रियाओं को सरल बनाने और कागजाती काम को कम करने की कोशिश लगातार चल रही है। हमने सूचना अधिकार कानून बनाया है, जो एक महत्वपूर्ण कानून है, जिससे सरकारी व्यवस्था की सूचना निश्चित समय सीमाके अंदर प्राप्त की जा सकती है। इससे सरकारी अधिकारियों का काम मुश्किल हो जाता है, लेकिन मैं समझता हूं कि देश के हित में कुल मिलाकर यह सही है।

यूरोपीय संघ अब तक भारत का व्यापार और निवेश का सबसे बड़ा भागीदार रहा है। यूरोपीय संघ के विस्तार से हमारे लिए इसका महत्व और बढ ज़ाता है। यूरोपीय व्यापार में भारतीयों की मौजूदगी बढ ऱही है। इससे हमारे संबंध और मजबूत होंगे। यूरोपीय संघ के देशों और भारत के बीच व्यापार और पूंजी निवेश को बढ़ाने के लिए और अधिक औपचारिक व्यवस्थाएं कायम करने के उद्देश्य से हम यूरोपीय संघ के साथ

परामर्श कर रहे हैं। हाल ही में उच्चस्तरीय व्यापार समूह की जो सिफारिशें प्राप्त हुई हैं वे आर्थिक सहयोग के भावी समझौते का आधार होंगी।

इस सबका मतलब यही है कि हमें अभी बहुत कुछ करना है। फिर भी सच्चाई यह है कि द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग का मौजूदा स्तर उस विशाल अनदेखी क्षमता से बहुत कम है, जो निसंदेह इस समय मौजूद है। मैं चाहता हूं कि आप अपने पूर्वजों जैसी साहस और उद्यम की भावना दिखाएं और एक बार फिर भारत में उपलब्ध अवसरों की खोज करें। एक नया भारत विश्वास की भावना और भविष्य की आशा के साथ आपका स्वागत करने के लिए तैयार है। जेसा कि मैंने कहा, भारतमें एक अरब से ज्यादा लोग एक खुले राजनीतिक तंत्र और खुले समाज की व्यवस्था में सामाजिक और आर्थिक उन्नति का रास्ता तलाश कर रहे हैं। मैं इस परिवर्तन की सफलता में सक्रिय साझीदार बनने के लिए यूरोप के उद्यमियों को आमंत्रित करता हूं और मैं समझता हूं कि यह 21वीं शताब्दी में मानव जाति के लिए बहुत ही ऐतिहासिक महत्व की बात है। यूरोप और भारत को उन्नति और समृद्धि में घनिष्ठ सहयोगी बनना चाहिए। हमें मिलकर भविष्य का निर्माण करना सीखना चाहिए।

****